नन्ही मछलियों ने नागद्वार लांघा

नन्ही मछलियों ने नागद्वार लांघा

लेखक : चिन चिन
चित्रकार : याङ शानचि और तिङ रुङलिन

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह
पेइचिङ

प्रथम संस्करण १९६१
दूसरा संस्करण १९८१

प्रकाशक : **विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह,**
२४ पाएवानच्वाङ मार्ग, पेइचिङ

मुद्रक : **जातीय मुद्रणालय,** पेइचिङ

वितरक : **क्वोची शूत्येन (चीनी प्रकाशन विक्रयकेन्द्र),**
पो. आ. बाक्स ३९९, पेइचिङ

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित

छाङच्याङ (याङत्सी) नदी के दक्षिण में एक छोटा-सा गांव था। वहां हरे रंग के पहाड़ एक दूसरे से सटे दूर तक फैले हुए थे। ऐसे ही एक पहाड़ की तलहटी में एक छोटी-सी नदी थी। कुछ नन्ही कार्प मछलियां नदी में खुशी से इधर-उधर तैरती रहती थीं।

एक नन्ही काली कार्प मछली बाकी मछलियों की नेत्री थी। एक दिन वह बोली : "बहिनो, जरा इधर तो आओ। मैं तुम्हें एक खुशखबरी सुनाती हूं।"

"कैसी खुशखबरी ?" बाकी कार्प मछलियों ने पूछा।

"मैंने अभी-अभी कुदान भरकर यह पुल पार कर लिया है !" वह बोली।

"तुम डींग मार रही हो।"

"मैं डींग क्यों मारूंगी ! अगर तुम्हें यकीन न हो, तो यहां आकर देख लो।"

"अच्छी बात है। हम देखते हैं कि तुम कुदान भरकर पुल कैसे पार करती हो।"

सब मछलियां पत्थर के एक पुराने पुल के नीचे जा पहुंचीं।

नन्ही काली कार्प मछली कुदान भरने की तैयारी करती हुई बोली : "अच्छा, तुम देखो, मैं पुल कैसे पार करती हूं!"

वह पूरे जोर से ऊपर उछली और पुल पार करती हुई छप्प की आवाज के साथ पानी में गिर गई।

तभी दादी मछली ने दूर से पुकारा :

"बच्चो, यहां आओ ! जल्दी आओ !"

नन्ही मछलियां तैरती हुई उसके पास जा पहुंचीं।

दादी मछली ने कहा : "बच्चो, तुम्हें उछलकर
ुल पार करने के लिए किसने कहा ? कितनी
खतरनाक बात है यह ! अगर पत्थर के पुल से
टकराकर तुम्हें चोट लग गई, तो क्या होगा ?"

"ऐसा नहीं हो सकता।"

"जब चोट लग जाएगी, तब मालूम होगा !
च्छा, तो सुनो। मैं तुम्हें एक कहानी सुनाती हूं।"

"हां दादी, कहानी सुनाओ !"

"दादी, जल्दी सुनाओ।"

दादी मछली बोली : "अच्छा, तो तुम लोग शोर न मचाओ। चुपचाप सुनो।"

नन्ही मछलियों ने दादी को चारों ओर से घेर लिया।

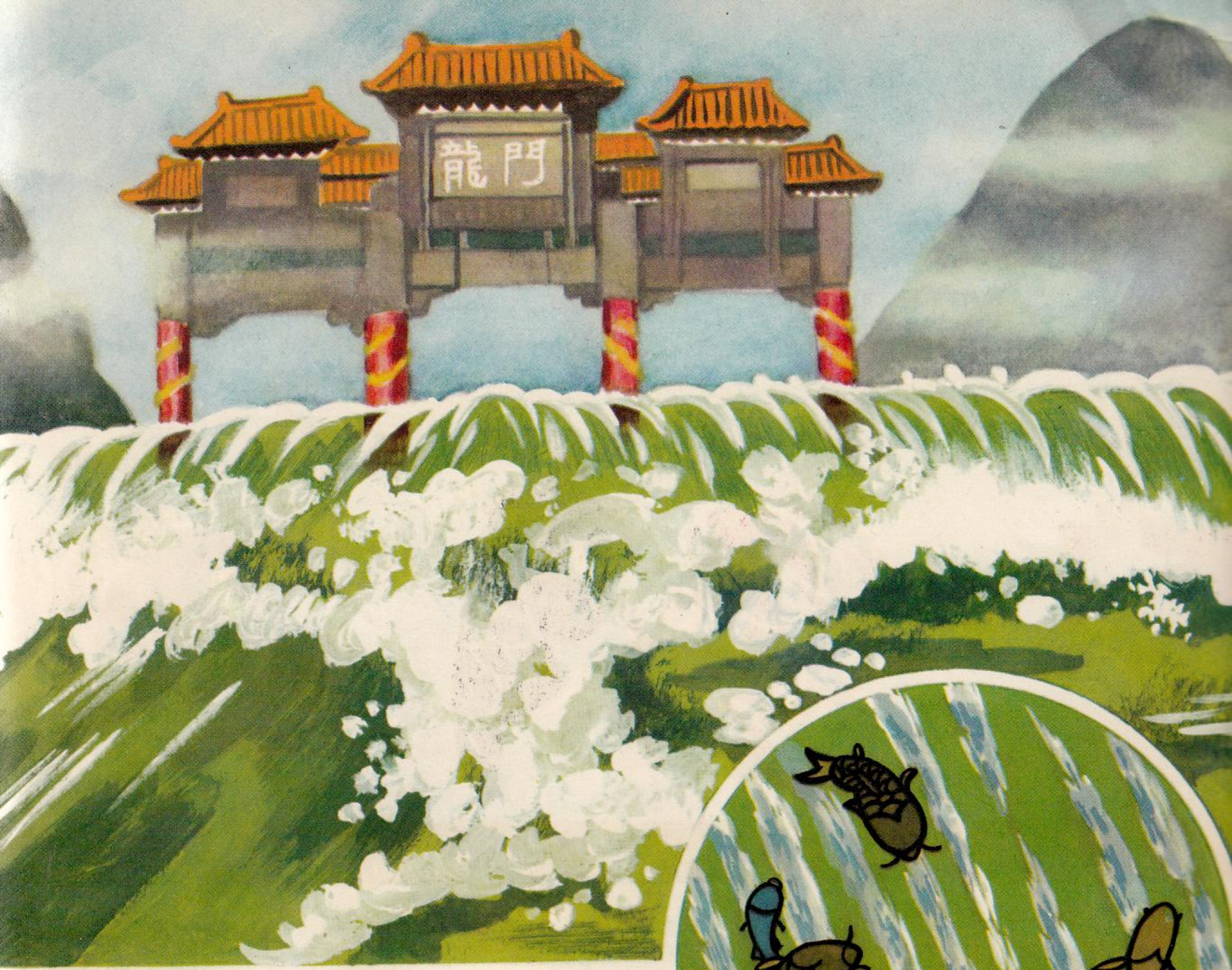

३१५८५–२ चाङ

दादी मछली कहानी सुनाने लगी : "पुरानी पीढ़ियों के बुजुर्ग कहा करते थे कि दुनिया में नागद्वार नाम का एक दरवाजा है, जो बड़े समुद्र श्रौर बड़ी नदी के बीच खड़ा है। वह बहुत ऊंचा है। श्रगर कोई मछली उछलकर इस दरवाजे को पार कर लेती है, तो वह एक बड़ा नाग बन जाती है। तुम्हारे दादा श्रौर उनके दादा ने इस दरवाजे को लांघने की कोशिश की थी। लेकिन किसी को कामयाबी नहीं मिल पाई . . ."

नन्ही काली मछली ने पूछा : "दादी, क्या मैं नागद्वार को लांघ सकती हूं ?"

दादी मछली ने कहा : "तुम बहुत छोटी हो। अभी नहीं लांघ सकती। शायद बड़ी होने के बाद भी नहीं लांघ पाओगी !"

नन्ही मछलियों ने पूछा : "दादी, यह दरवाजा कहां है ?"

दादी ने सिर हिलाकर कहा : "यह मैं भी नहीं जानती।"

नन्ही मछलियां शोर मचाने लगीं। वे तैरकर नदी के उस पार पहुंच गईं और आपस में कानाफूसी करने लगीं।

नन्ही काली मछली ने कहा : "तुम लोग जाओ या न जाओ, मैं तो नागद्वार को खोजने जरूर जाऊंगी। उसे लांघकर अगर मैं बड़ा नाग बन गई, तो कितना अच्छा होगा ! इस छोटी नदी में रहना मुझे अच्छा नहीं लगता।"

"मैं भी जाऊंगी, मैं भी जाऊंगी।" बाकी नन्ही मछलियां बोल पड़ीं।

सबसे छोटी मछली ने कहा : "मैं भी जाना चाहती हूं। लेकिन उसे लांघने के बाद फिर यहीं लौट आऊंगी।"

"तब तो तुम्हें नहीं जानां चाहिए।"

"अच्छा बाबा, अच्छा ! जहां तुम लोग जाओगे, वहीं मैं भी जाऊंगी।"

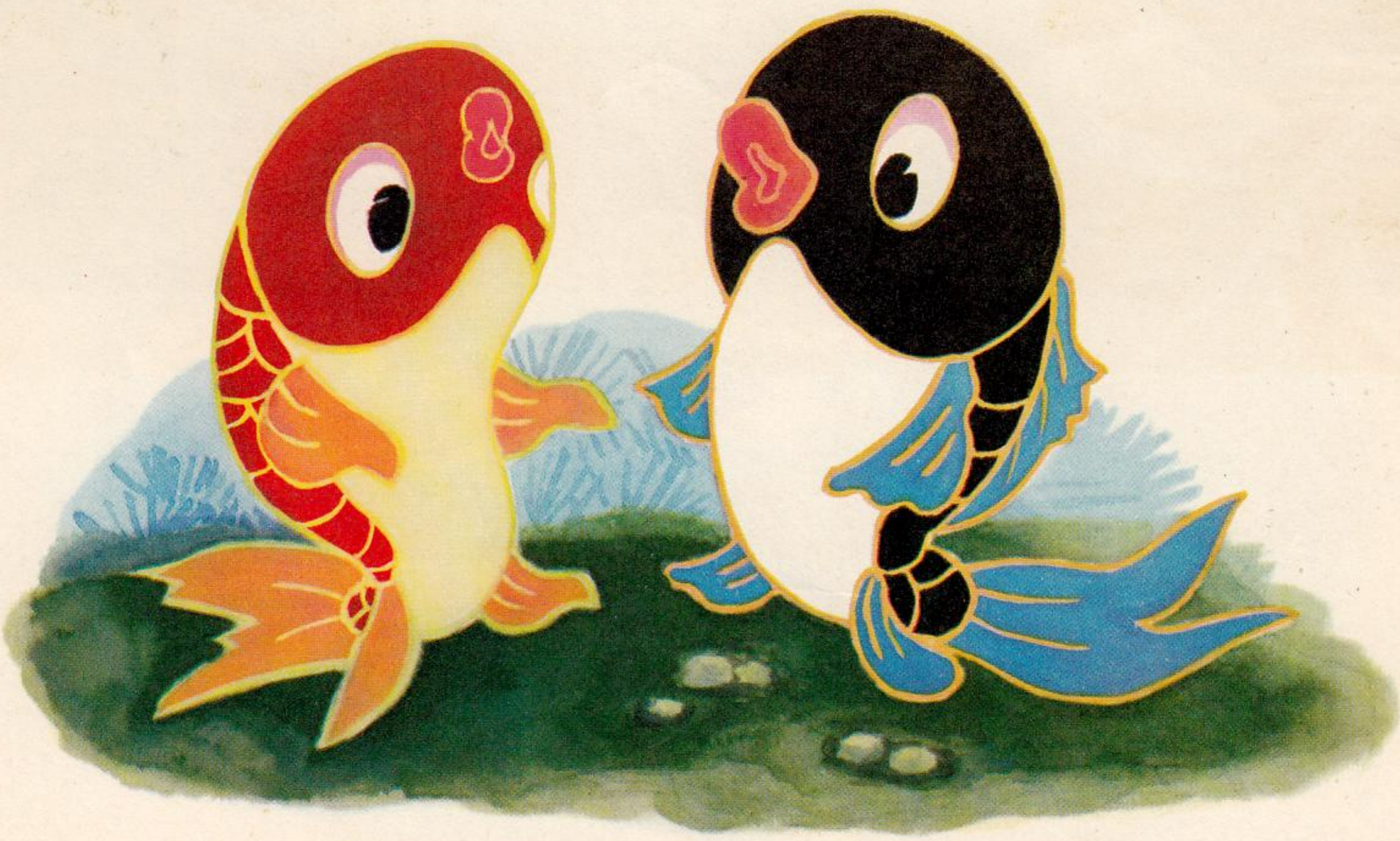

काली मछली बाकी नन्ही मछलियों को साथ लेकर तैरने लगी।

वे सब साथ-साथ नदी के उद्‌गम की ओर बढ़ने लगीं। नन्ही काली मछली बार-बार पानी की सतह पर उछल-कूद कर रही थी। उसे नागद्वार नहीं मिला। नन्ही मछलियां लगातार आगे बढ़ती रहीं। उन्हें विश्वास था कि अगर वे धीरज से काम लेंगी, तो नागद्वार जरूर मिल जाएगा।

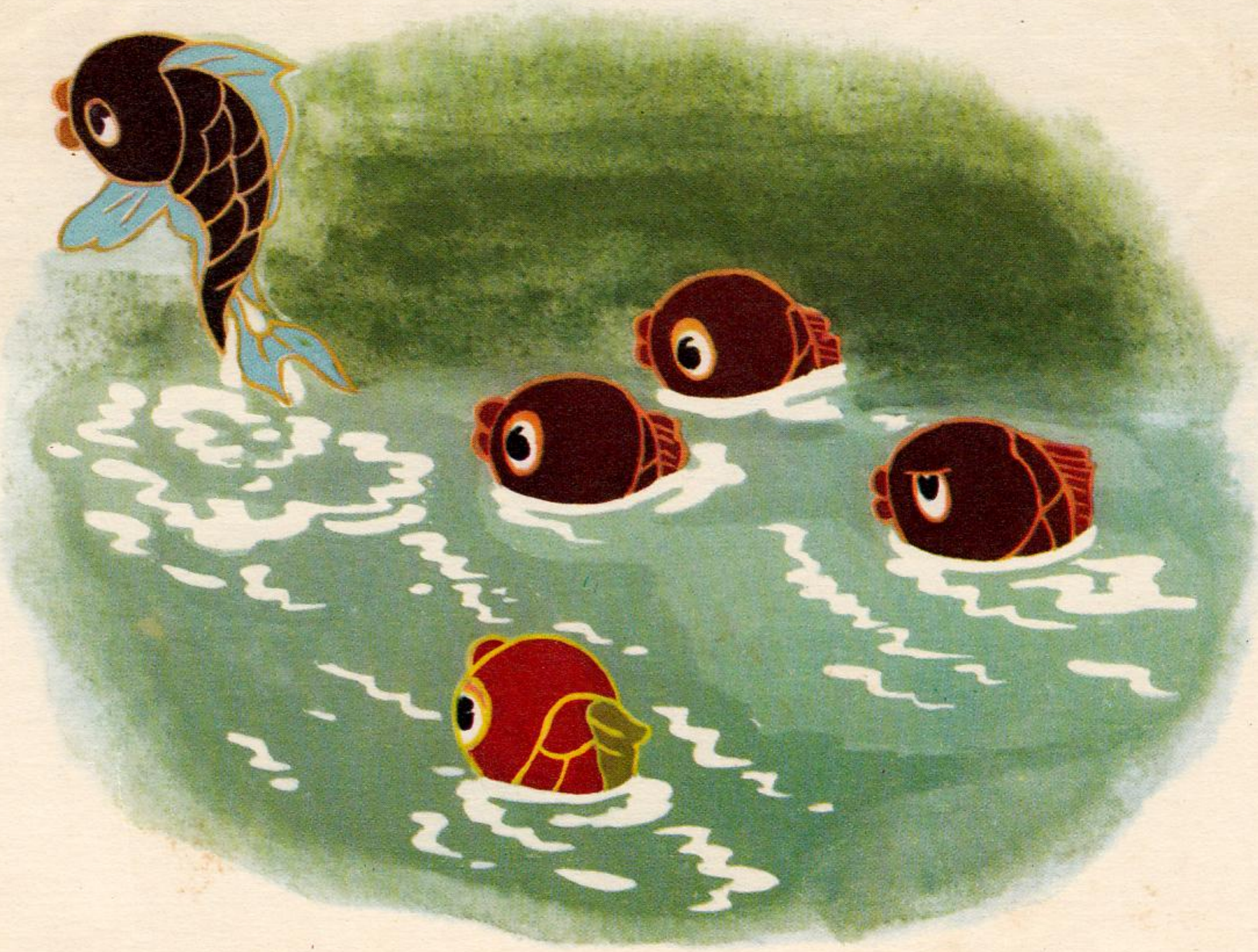

कई मोड़ों से गुजरने के बाद उन्हें महसूस हुआ कि नदी का पाट बहुत चौड़ा है और पानी बहुत गहरा है। तेज धार को पार करके जब वे नदी के मन्द बहाव वाले भाग में पहुंचीं, तब कहीं उन्होंने सन्तोष की सांस ली।

सबसे छोटी मछली भी तैरती हुई वहां आ पहुंची और हांफती हुई बोली : "नागद्वार कहां है ?"

एक अन्य नन्ही मछली ने पूछा : "नागद्वार दक्षिण की ओर है या उत्तर की ओर ?" नन्ही काली मछली ने कहा : "दादी ने कहा था कि नागद्वार बहुत ऊंचा है। इसलिए वह जरूर नदी के ऊपरी भाग में होगा। ऊपर की ओर तैरते चलो। वह जरूर मिलेगा।"

यह सुनकर नन्ही मछलियां जल्दी-जल्दी आगे बढ़ने लगीं।

रास्ते में उन्हें घासपात व सेवार मिली। उसे पार कर वे आगे बढ़ने लगीं। सबसे छोटी मछली ने जरा लापरवाही की। इसलिए उसकी पूंछ सेवार में फंस गई। उसके लिए आगे बढ़ना मुश्किल हो गया।

अचानक कोई जोर से चिल्लाया : "अरे ! मेरे जंगल में कौन घुस आया है ?"

नन्ही मछलियों ने देखा, एक बड़ा-सा केकड़ा सामने से आ रहा है। केकड़ा बोला : "तुम लोग मेरी इजाजत के बिना यहां कैसे आ गए ? जल्दी भाग जाओ यहां से !"

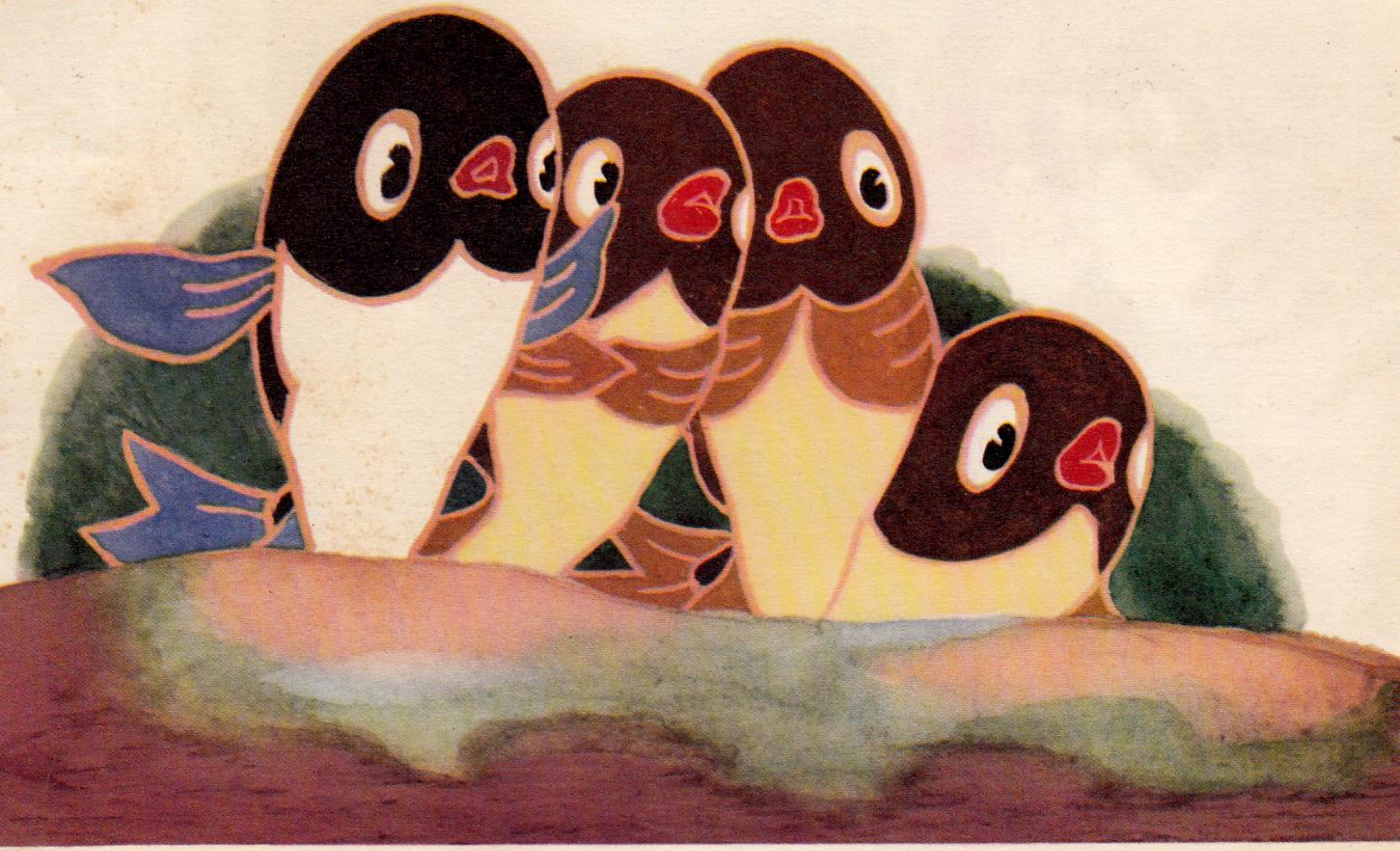

नन्ही काली मछली ने बड़ी बहादुरी के साथ कहा : "हम लोग नागद्वार को खोजने जा रहे हैं। हम उसे लांघना चाहते हैं।"

यह सुनकर केकड़ा चट्टान से रेंगकर नीचे उतर आया और तिरस्कारपूर्वक बोला : "अच्छा, तो तुम लोग नागद्वार को लांघना चाहते हो ! लेकिन नागद्वार को लांघने तुम्हें भेजा किसने है ?"

"हमें किसी ने नहीं भेजा, हम लोग खुद ही आए हैं," नन्ही काली मछली ने जवाब दिया।

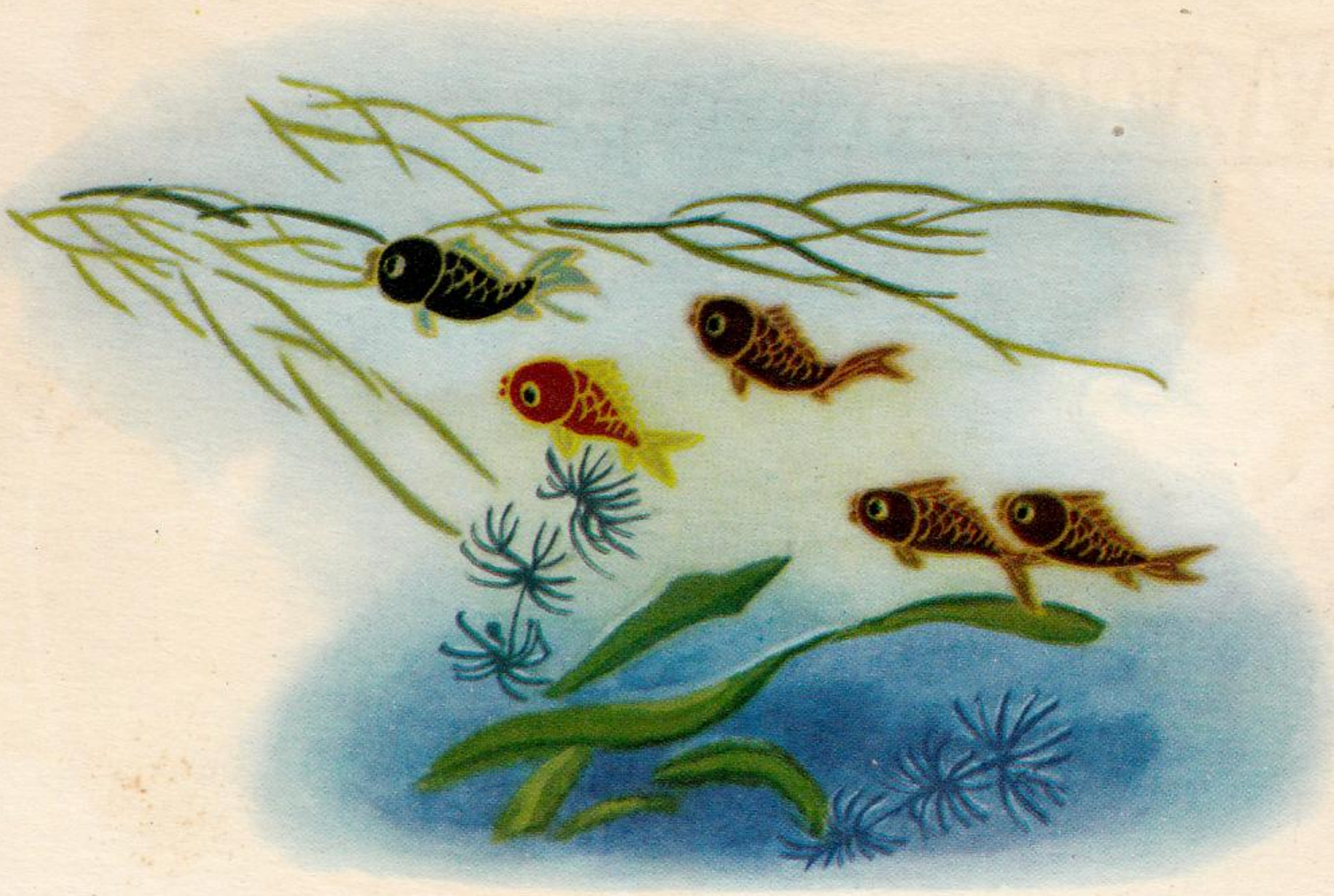

केकड़ा ठहाका मारकर हंस पड़ा। वह बोला : "अच्छा, अच्छा! मैं तुम्हारी मदद करूंगा।" यह कहकर उसने रास्ते की सारी घासपात व सेवार अपने पंजों से हटा दी।

नन्ही मछलियों ने केकड़े को धन्यवाद दिया और वे आगे की ओर तैरने लगीं।

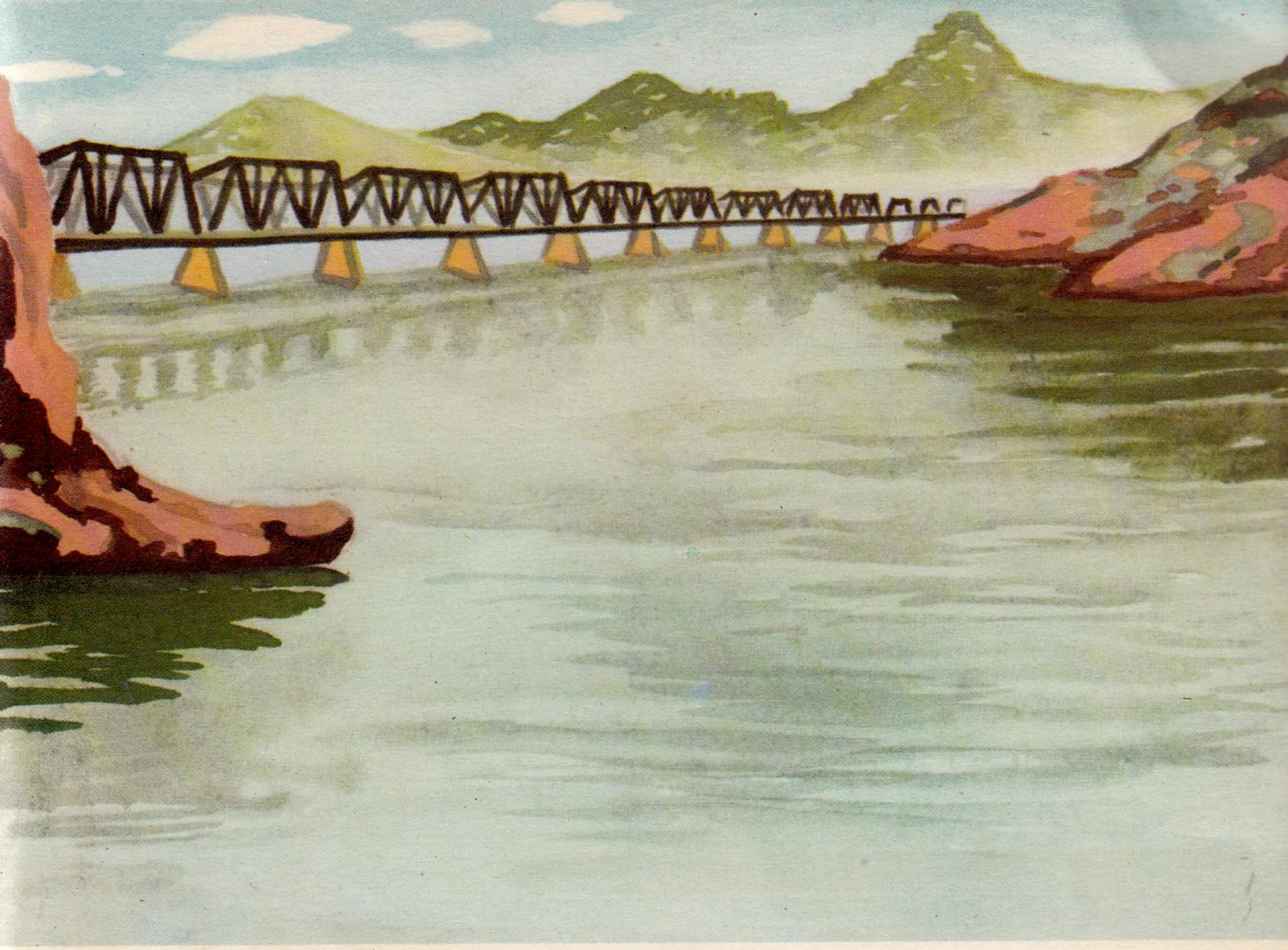

अचानक दूर से एक लम्बा पुल दिखाई दिया। नन्ही काली मछली पानी की सतह पर जा पहुंची और चिल्लाई : "जल्दी आओ ! इधर देखो, यह है नागद्वार !" वह दरअसल एक लम्बा रेलवे-पुल था।

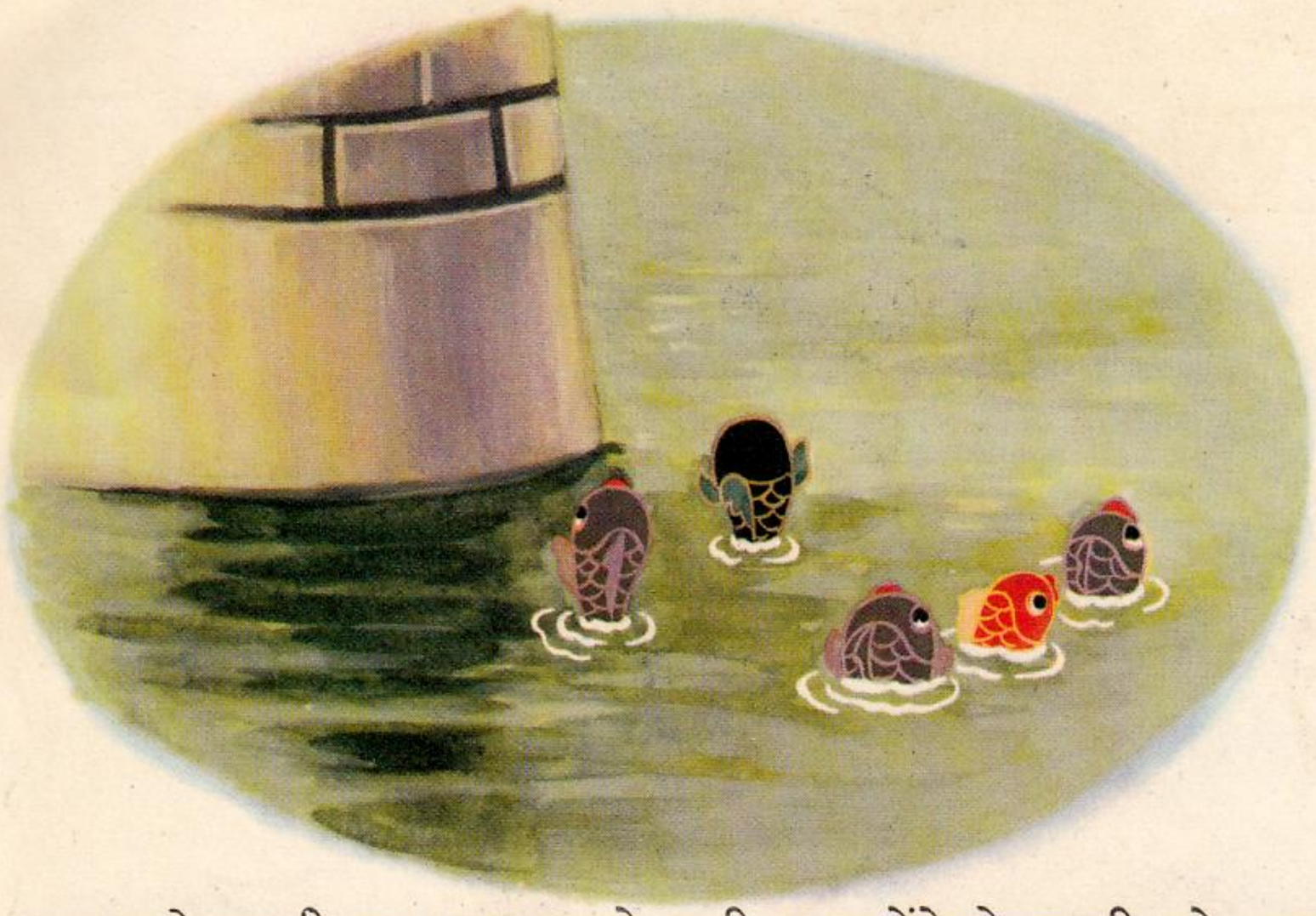

नन्ही मछलियों को बड़ी खुशी हुई। वे झूमने लगीं। उन्होंने रेलवे-पुल को नागद्वार समझा और उसे लांघने की तैयारी करने लगीं। बाद में उन्हें मालूम हो गया कि पुल के नीचे से भी तैरने का रास्ता है। इसलिए मछलियां जल्दी-जल्दी तैरकर पुल के दूसरी ओर पहुंच गईं। वे अभी अन्दाज ही लगा रही थीं कि यह नागद्वार है या नहीं कि सफेद धुएं के बादल उड़ाती एक रेलगाड़ी पुल पार करने लगी। उन्होंने रेलगाड़ी को एक बड़ा नाग समझा। डर के मारे वे सब नदी के पेंदे में जा छिपीं। जब रेलगाड़ी बहुत दूर चली गई, तब कहीं नन्ही मछलियों की जान में जान आई। उन्होंने सोचा, यह जरूर कोई बड़ा नाग है। इसलिए वे जल्दी-जल्दी आगे बढ़ने लगीं।

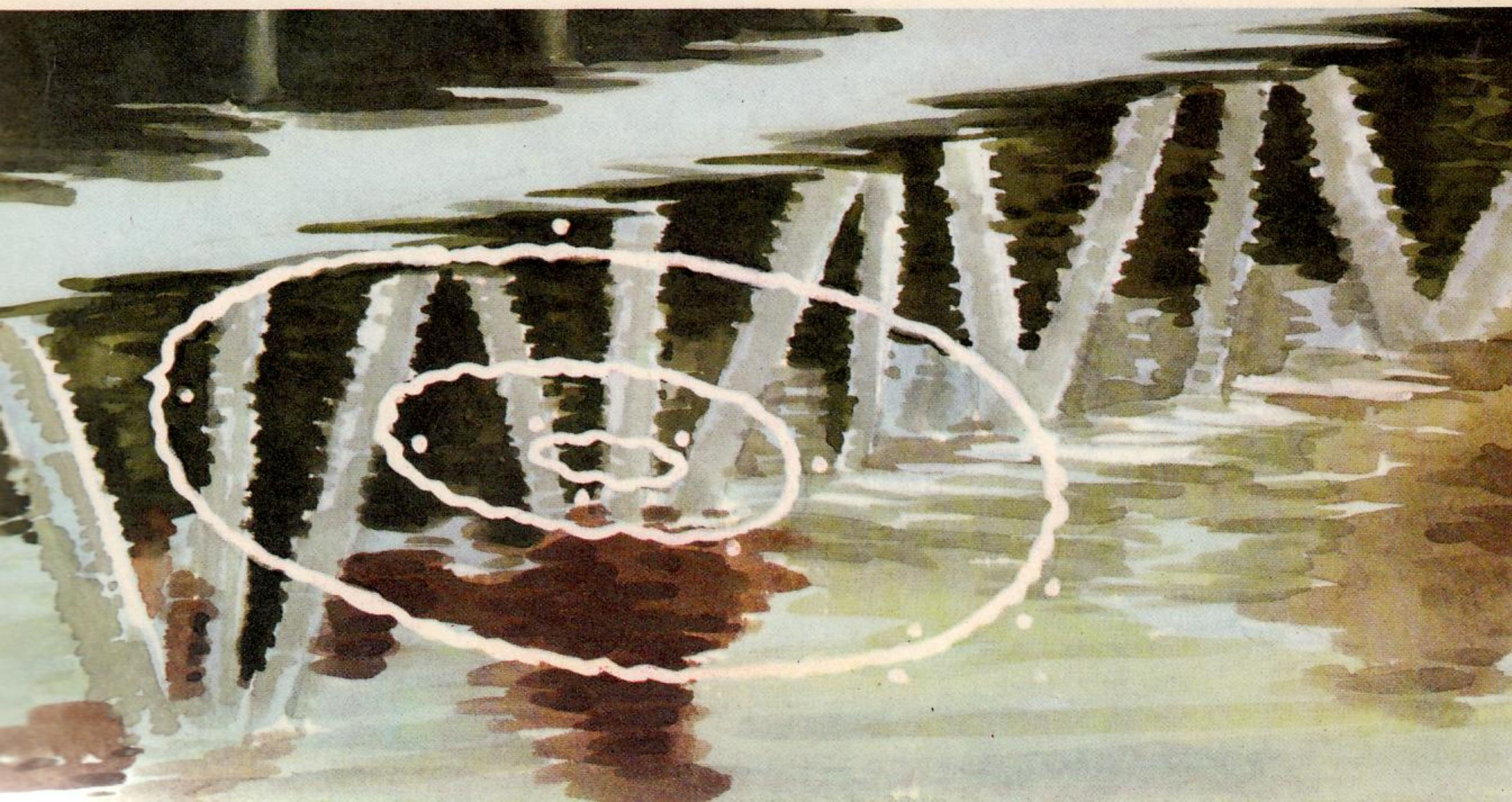

नन्ही मछलियां तेजी से तैरती जा रही थीं। जब वे तेज धार में पहुंचीं, तो उन्हें घासपात व सेवार के पीछे एक बड़ी-सी मछली मिली, जो बहुत सी छोटी मछलियों को लेकर नदी के निचले भाग की ओर जा रही थी। बड़ी मछली ने उन्हें देखकर कहा : "नन्ही मछलियो ! नदी के ऊपरी भाग में मत जाओ। तेज धार में बह जाओगी। जल्दी वापस लौट जाओ !"

नन्ही मछलियों ने कहा : "हम नागद्वार को लांघने जा रहे हैं।"

बड़ी मछली को उन पर विश्वास नहीं हुआ। वह सिर हिलाती हुई बोली : "ओह ! तो तुम नागद्वार लांघने जा रही हो ? क्या तुम सपना तो नहीं देख रही हो ?" यह कहती हुई बड़ी मछली छोटी मछलियों के साथ नदी के निचले भाग की तरफ चली गई।

नन्ही मछलियां नदी के तेज बहाव का मुकाबला करती हुई आगे बढ़ने लगीं। उनके मन में नागद्वार को लांघने का पक्का इरादा था। वे तैरती हुई एक जलाशय के पास जा पहुंचीं और जलाशय के बांध को नागद्वार समझ बैठीं। वे उसे लांघने की तैयारी करने लगीं। लेकिन बहाव बेहद तेज था और लहरें जोर से उमड़ रही थीं। बार-बार कोशिश करने पर भी वे बांध को पार नहीं कर सकीं।

नन्ही काली मछली ने एक बार फिर कोशिश की। पानी की लहर पर सवार होकर वह बहुत ऊंची उछली। तभी उसे एक उपाय सूझ गया, जिससे सब मछलियां बांध को लांघ सकती थीं। वह इस तरह था : पहले एक मछली लहर पर सवार होकर ऊपर उछली, उसके बाद दूसरी मछली उछली और उसने पहली मछली को और ऊपर उछाला। इस तरह वे सब बांध को लांघ गईं। जब उमड़ती लहरों ने आखिरी मछली को भी बांध के उस पार पहुंचा दिया, तो सब मछलियां बड़ी खुश हुईं।

बांध के उस पार पानी बहुत शान्त था। नन्ही मछलियां पानी की सतह पर तैरने लगीं। दोनों किनारों की जमीन समतल थी। वहां बेद और आड़ू के पेड़ खड़े थे। आड़ू के लाल फूलों और बेद की हरी पत्तियों से लदे ये पेड़ बहुत सुन्दर दिखाई दे रहे थे। नन्ही मछलियां पानी की सतह पर मुंह से बुलबुले बनाने लगीं। उन्हें यहां बहुत अच्छा लग रहा था। उन्होंने सोचा, यह जगह तो दादी की कहानी से भी ज्यादा सुन्दर है।

शाम को पानी में बत्तियों की रोशनी जगमगा उठी। चारों ओर इस तरह रोशनी फैल गई जैसे दिन हो। नन्ही मछलियों को यह देखकर बहुत अचम्भा हुआ। इस रोशनी को उन्होंने चांद-सितारों की रोशनी समझा और सोचा कि वे स्वर्ग में पहुंच गई हैं।

तभी एक अबाबील आ पहुंची। उसने हैरान होकर कहा :

"अरे, नन्ही मछलियो! तुम यहां कैसे पहुंच गई हो?"

नन्ही मछलियों ने कहा :

"हम नागद्वार को लांघकर यहां आए हैं!"

"हम उड़कर यहां आए हैं!"

"चारों ओर रोशनी फैलाने वाली ये चमकदार चीजें क्या हैं ? क्या ये सितारे हैं ?" उन्होंने अबाबील से पूछा।

"कहा जाता है कि ये रात को चमकने वाले रत्न हैं," अबाबील ने मुस्कराकर जवाब दिया।

"अहा, कितने ज्यादा रत्न हैं ?" नन्ही मछलियां खुश होकर बोलीं। अबाबील ने उन्हें दूर तक नजर डालने को कहा। दूर की रोशनियां तो बिलकुल तारों की ही तरह दिखाई दे रही थीं।

BC|31

अबाबील अपने घर लौट रही थी।

नन्ही मछलियों की नेत्री काली कार्प मछली को अचानक एक बात याद आ गई और वह बोली : "अबाबील चाची, क्या आप हमारा सन्देश दादी को पहुंचा सकती हैं?"

अबाबील ने हामी भर ली, तो नन्ही काली मछली ने कहा : "दादी से कह दें कि हमने नागद्वार को लांघ लिया है।"

दूसरी मछली ने कहा : "यह एक बहुत अच्छी जगह है। दादी को कह दें कि परिवार के बाकी लोगों के साथ वे भी यहां आ जाएं।"

अबाबील ने मान लिया। वह बोली : "तुम्हारा यह सन्देश मैं दादी को जरूर पहुंचा दूंगी। लेकिन यह नागद्वार नहीं है। यह स्थान तो नागद्वार जलाशय कहलाता है।"

नन्ही मछलियां बोलीं : "इससे क्या फर्क पड़ता है? इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि यह सबसे शानदार जगह है।"

अबाबील ने उनसे विदा ली और सांझ के झुटपुटे में अपने रैन-बसेरे की ओर उड़ चली। नन्ही मछलियों ने बड़े उत्साह से उसे विदा किया।

3/40

小 鲤 鱼 跳 龙 门

金 近 写

杨善子 丁榕臨 画

*

外文出版社出版

（中国北京百万庄路24号）

民族印刷厂印刷

中国国际书店发行

1961:（20开）第一版

1981年第二版

编号:（印地）8050—544

00075

88—H—79P